

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, किंग्स, सत्र 29, भाग 2

2 राजा 22-23, भाग 2

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

तो, वे हुल्दा गए, और मैंने यहाँ अलार्म घड़ी का इस्तेमाल किया है, हुल्दा अलार्म घड़ी है, अगर आप चाहें तो। अब, मेरा सवाल यह है कि ये लोग आखिर हुल्दा क्यों गए? वे मंदिर में क्यों नहीं गए और उरीम और तुम्मीम क्यों नहीं लाए, जिनके बारे में हमें ठीक से पता नहीं है कि वे क्या थे। वे शायद पासे थे, वे घन थे, और संभवतः घन के विभिन्न चेहरों पर सफेद और काले चेहरे थे।

संभवतः, यदि आप उन्हें नीचे फेंकते हैं और दो सफेद मिलते हैं, तो यह हाँ था, और यदि आपको दो काले मिलते हैं, तो यह नहीं था, और यदि आपको एक काला और एक सफेद मिलता है, तो यह फिर से प्रयास करना था। हम जानते हैं कि उन्होंने बाद में एज्रा के साथ ऐसा किया था, इसलिए अधिकांश संदर्भ डेविड और बाद के न्यायाधीशों में राज्य काल में पहले के हैं, लेकिन वे ऐसा कर सकते थे। क्या यह ईश्वर का वचन है? बिंगो, हाँ।

वे हुल्दा के पास क्यों गए? ध्यान दें कि हुल्दा क्या कहती है; यह श्लोक 16 और उसके बाद है। वह सिर्फ यह नहीं कहती कि हाँ, यह प्रामाणिक है। यही बात उन्हें उरीम और तुम्मीम से पता चल सकती थी।

वह क्या कहती है कि वे उरीम और तुम्मीम से नहीं जान पाएंगे? यह वही है जो यहोवा कहता है: मैं इस स्थान और इसके लोगों पर विपत्ति लाने जा रहा हूँ, जैसा कि यहूदा के राजा ने पढ़ी पुस्तक में लिखा है क्योंकि उन्होंने मुझे त्याग दिया है और अन्य देवताओं के लिए धूप जलाया है और अपने हाथों से बनाई गई सभी मूर्तियों से मेरा क्रोध भड़काया है, मेरा क्रोध इस स्थान के विरुद्ध भड़केगा और शांत नहीं होगा। वाह। तो, योशियाह वास्तव में क्या पूछ रहा था? वह यह नहीं पूछ रहा था कि क्या यह वास्तव में परमेश्वर का वचन था या नहीं।

उसने पहले ही तय कर लिया था कि यही होगा। वह क्या पूछ रहा था? क्या हम इससे बच पाएंगे? ठीक है, ठीक है। हमने गलत किया है।

मेरे वस्त्र फाड़ दो। इसका क्या मतलब है? इसका क्या महत्व है? और यहाँ परमेश्वर की आत्मा आती है जो कहती है कि इसका महत्व यह है कि यहूदा ने पाप करके अपनी कृपा खो दी है। मुझे आश्चर्य है कि परमेश्वर आज अमेरिका के बारे में क्या कहेगा।

हम जानते हैं कि जीवन जीने के तरीके के बारे में वे क्या कहते हैं। हम जानते हैं कि वे क्या कहते हैं कि क्या सही है और क्या गलत। लेकिन हमारे लिए इसका क्या मतलब है? जहाँ तक मुझे पता है, हमारे पास कोई भविष्यवक्ता नहीं है।

शायद हमें किसी की ज़रूरत नहीं है। शायद परिणाम काफ़ी स्पष्ट है। अब वह हुल्दा के ज़रिए कहता है, मैं इस राष्ट्र पर विपत्ति लाने जा रहा हूँ क्योंकि उन्होंने मुझे त्याग दिया है, अन्य देवताओं

के लिए धूप जलाया है, और अपने हाथों से बनाई गई सभी मूर्तियों के ज़रिए मेरा क्रोध भड़काया है।

मूर्तिपूजा पर यह अड़चन क्या है? भगवान मूर्तिपूजा से इतने नाराज क्यों हैं? विश्वदृष्टि के बारे में सोचें। मूर्तिपूजा किस विश्वदृष्टि पर आधारित है? दुनिया असली नहीं है। और यह ब्रह्मांड, जिसमें वास्तविक आध्यात्मिक घटक भी शामिल है, ही सब कुछ है।

एक मूर्ति क्यों काम करती है? हमने इस बारे में पहले भी कई बार बात की है, लेकिन मैंने आपके साथ सिर्फ एक और सप्ताह बिताया। यह एक ऐसे विश्व दृष्टिकोण पर आधारित है जो सत्य के बिल्कुल विपरीत है। यह इस दृष्टिकोण पर आधारित है कि ब्रह्मांड ही सब कुछ है। ब्रह्मांड में, मनुष्य है, प्रकृति है, और ईश्वर है।

यहाँ की हर चीज़ एक दूसरे से जुड़ी हुई है। आप किसी जानवर के साथ कुछ करते हैं, तो आप उसे भगवान के साथ करते हैं। आप बारिश के साथ कुछ करते हैं, तो आप उसे भगवान के साथ करते हैं।

यह सब जादुई हेरफेर की पूर्वधारणा पर आधारित है। मुझे ऐसा ईश्वर नहीं चाहिए जिसे मैं नियंत्रित न कर सकूँ। मुझे ऐसा ईश्वर नहीं चाहिए जिस पर मुझे भरोसा करना पड़े।

मैं ऐसा ईश्वर नहीं चाहता जिसे मुझे समर्पित करना पड़े। तो, मूर्ति, वह एक मूर्ति है, चाहे आप मानें या न मानें। मूर्ति प्राकृतिक सामग्रियों से बनी एक मानव के आकार की है, और माना जाता है कि उसमें एक ईश्वर का वास है।

मूर्तिपूजा उस झूठे विश्वदृष्टिकोण की सही अभिव्यक्ति है। सच्चाई यह है कि ईश्वर ब्रह्मांड से बाहर है। वह ब्रह्मांड नहीं है।

यह वास्तव में तर्क देता है कि देवता ही संसार है, और संसार ही देवता है। मानवता और प्रकृति के बीच एक कठोर सीमा है, जैसे ईश्वर और हमारे बीच एक कठोर सीमा है।

एक प्रसिद्ध व्यक्ति ने कहा, कोई भी स्वर्ग में जाकर भगवान को नीचे नहीं ला सकता। अब यह बदसूरत होने जा रहा है, लेकिन आपको इसे सुनना होगा। पशुता एक धार्मिक कथन है।

मेरे और गाय के बीच कोई सीमा नहीं है। समलैंगिक व्यवहार एक धार्मिक कथन है। मेरे और दूसरे नर के बीच कोई सीमा नहीं है।

अनाचार एक धार्मिक कथन है। मेरे और मेरी बेटी के बीच कोई सीमा नहीं है। क्या यह बिल्कुल भी वर्तमान लगता है? बिल्कुल सही।

लिंग के इर्द-गिर्द कोई सीमा नहीं है। विवाह के इर्द-गिर्द कोई सीमा नहीं है। भगवान कहते हैं कि सीमाएं हैं।

मैंने जो सीमाएं बनाई हैं, उन्हें मैंने ही डिजाइन किया है। आप किसी जानवर के साथ सेक्स नहीं कर सकते। आप एक अलग तरह के प्राणी हैं।

आप अपनी बेटी के साथ सेक्स नहीं कर सकते। वह आपकी संपत्ति नहीं है जिसका आप इस्तेमाल कर सकें। अब, भगवान की स्तुति करो, वह किसी भी समय अपनी दुनिया को बदल सकता है और करता भी है।

सीमा एक तरफ है, लेकिन वह वहीं है। इसलिए बाइबल में परमेश्वर मूर्तिपूजा से घृणा करता है। क्योंकि मूर्तिपूजा उस झूठे विश्वदृष्टिकोण की अंतिम अभिव्यक्ति है।

अब मैंने आपसे पहले भी यही कहा है। विश्वदृष्टिकोण केवल दो ही हैं। एक बाइबिल आधारित और दूसरा बाइबिल आधारित।

या तो भगवान संसार है या फिर भगवान संसार नहीं है। अपनी पसंद चुनें। आधुनिक बुतपरस्ती ने इन मूर्तियों से छुटकारा पा लिया है।

लेकिन यह किसी भी चीज़ से ज़्यादा मूर्तिपूजा है। मैं ब्रह्मांड में हेरफेर करके अपनी ज़रूरतें पूरी कर सकता हूँ। यह मूर्तिपूजा है।

यह मूर्तिपूजक रवैया है। मुझे यह महसूस करने की ज़रूरत है कि मैं एक असली आदमी हूँ। अच्छा है कि मैं बाहर जाऊँ और एक BMW खरीदूँ।

मुझे यह महसूस करने की ज़रूरत है कि मैं एक असली महिला हूँ। जाओ और ढेर सारे नए कपड़े खरीदो। देखो पॉल ने मूर्तिपूजा के बारे में सही कहा है।

एक अच्छा लालच जो मूर्तिपूजा है। मैं चाहता हूँ, और मैं अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए दुनिया को हेरफेर कर सकता हूँ। भगवान मूर्तिपूजा से नफरत करते हैं।

ठीक है, अब मैं अपनी बात पर अड़ा हुआ हूँ। अब हुल्दा कहती है कि योशियाह, तुम यह परिणाम नहीं देखोगे। क्यों नहीं? श्लोक 19 को देखिए।

तुम्हारा हृदय प्रतिक्रिया कर रहा था, और जब तुमने मेरी बातें सुनीं तो तुमने प्रभु के सामने खुद को दीन किया। तुमने अपने वस्त्र फाड़े और मेरे सामने रोए। अब मुझे लगता है कि यह दिलचस्प है।

वह किस बात पर रो रहा था? राष्ट्र के पापों पर। वह अपने पापों पर नहीं रो रहा था। वह एक अच्छा ईश्वरीय व्यक्ति था।

मुझे आश्चर्य है कि मैं कितनी बार अमेरिका के पापों पर रोता हूँ। या मैं पीछे खड़ा होकर ना, ना, ना कहता हूँ। समस्या का एक हिस्सा हमारा चरम व्यक्तिवाद है।

खैर, मैं इसका हिस्सा नहीं हूँ। बाइबल कहती है कि हाँ, आप हैं। हम एक दूसरे का हिस्सा हैं, चाहे हम इसे पसंद करें या नहीं।

और इसलिए मेरे लोगों के पापों के कारण सचमुच दिल टूट गया। इसलिए, वह गया और वेदी के पास खड़ा हो गया और उसने एक वाचा बाँधी। पद 3. प्रभु की उपस्थिति में।

संभवतः, इसका मतलब है कि उसने बलि के जानवर को दो टुकड़ों में काटा। और वह उनके बीच से चला और बोला, भगवान। मैं आपके साथ एक वाचा में प्रवेश कर रहा हूँ।

और अगर मैं कभी इन वादों को तोड़ता हूँ तो तुम मेरे साथ भी ऐसा ही करते हो। वाह। प्रभु का अनुसरण करने के लिए, यह श्लोक 3 है। अपने पूरे दिल और पूरी आत्मा से उसकी आज्ञाओं, विधियों और नियमों का पालन करना।

रखना ' शब्द हिब्रू में एक मजबूत शब्द है। इसका मतलब है सावधान रहना। मैं आपकी इन आज्ञाओं के संबंध में खुद को सावधानी से बचाने जा रहा हूँ।

मैं सावधानी से इनकी रक्षा करूँगा। मैं इनके सम्बन्ध में अपने ऊपर निगरानी रखूँगा। और इस प्रकार मैं इस पुस्तक में लिखी वाचा के वचनों को स्थापित करूँगा।

अब, यह आखिरी वाक्य कुछ ऐसा है जो मेरे दिमाग में तब आया जब मैं किंग्स पर टिप्पणी पर काम कर रहा था। क्योंकि मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा था, इसलिए एनआईवी यही कहता है।

और देखते हैं। दुर्भाग्य से, NLT इस बात से सहमत है। सभी लोगों ने वाचा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई।

ईएसवी और एनआरएसवी कहते हैं कि सभी लोग वाचा में शामिल हुए। और एसबी कहता है कि प्रवेश किया। हिब्रू कहता है कि वे वाचा में बने रहे।

जब मैं स्वर्ग पहुँचूँगा तो इसके बारे में पूछूँगा, लेकिन मुझे लगता है कि इसका मतलब यह है कि वे चुपचाप खड़े होकर देखते रहे।

ध्यान दें कि यह राजा ही था जिसने वाचा बाँधी थी। पद 3 में बहुत स्पष्ट रूप से कहा गया है। राजा खंभे के पास खड़ा था, और उसने प्रभु के साथ वाचा बाँधी। यहाँ तक कि यह भी नहीं कहा गया है कि उसने उनकी ओर से वाचा बाँधी थी।

यह सिर्फ इतना है कि उसने कसम खाई। और वे खड़े होकर बोले कि यह अच्छा है। अब मैं जा रहा हूँ, और हमारा समय यहाँ खत्म हो रहा है।

और मैं जल्दी से अपना हाथ दिखाने जा रहा हूँ। जब हम अगले अध्याय, अध्याय 23 में उसके सुधारों पर जाएंगे, तो हम देखेंगे कि इनमें से हर एक कार्य राजा द्वारा किया गया था।

हमारे पास एक भी बार ऐसा नहीं हुआ कि कोई ऐसा करे। मुझे लगता है कि इससे पता चलता है कि आगे क्या हुआ। तीन बेटों के साथ।

जिनके बारे में हमें बताया गया है कि उन्होंने प्रभु की दृष्टि में बुरा किया है। मुझे पूरा भरोसा है। और मैंने पिछली बार भी इसका उल्लेख किया था।

जब बाइबल कहती है, परमेश्वर मनश्शे के पापों के लिए उन्हें क्षमा नहीं करेगा। वाह। चाहे वे कितने भी अच्छे क्यों न हों।

चाहे उन्होंने कितनी भी वाचाएँ क्यों न बनायी हों। परमेश्वर उन्हें पकड़ने वाला था। नहीं, ऐसा पाठ में नहीं लिखा है।

मुझे लगता है कि यह कहना है कि उन्होंने कभी भी मनश्शे के पापों को अस्वीकार नहीं किया। जैसा कि मैंने पिछली बार कहा था, मनश्शे वह रंग था जिसमें उस समय साँचा बनाया जाता था। वह वह साँचा था जिसमें धातु डाली जाती थी।

उन्होंने कभी कुछ और नहीं चुना। इसलिए, यह सुधार एक अच्छी बात थी, लेकिन यह देश में नहीं फैल पाई।